"तीन वचन"

1. स्थान विशेष पर जाने वाले को क्या बयान किया जाये, उसका तोड़ केवल संग मात्र करने वाला यदि सरदार विशेष को इन आँखों से देख लेगा तो कल्पना तो एक तरफ रही जो प्रत्यक्ष उपलब्ध है उसका संग करने वाली आत्मा विशेष, वो भी अवश्य भयानक रूप से डूब जाएगा । (इस कथन की मात्रा को बदलने की कल्पना एक तरफ रही जर्रा मात्र भी यह सत्ता भी हिला नहीं सकती , चाहो तो अपने गुरूओं परमात्माओं सहित कोशिश करके देखो ।)

2. इस राज आवरण को देखने का क्या बयान किया जाये केवल टेढ़ी नजर से इसके स्थान विशेष को देखने वाली आत्मा विशेष के लिए अनंत काल का घौर भयानक नरक निश्चित है । (अब जिस किसी भी आत्मा विशेष ने मानसिक अथवा शारीरिक रूप से इस प्रक्रिया में दखल दिया है उसके घौर महाभयानक दुखों के निश्चित भोगने को कैसे अथवा किन लफजों में बयान किया जा सकता है ?)

3. कौआ केवल गंद में चोंच मारता है,और हंस केवल मरना पसंद करता है सुच्चे मोतियों के बिना इसी तरह एक घौर विशाल समरथ महाहरामी है जो केवल उसी का भोग लगाता है जिसके साथ केवल सच लफ्ज़ लगता है जैसे सचखंड, सचेपातशाह, सतिगुरू, सच्ची ज्योतों वाले वगैरह, वगैरह, वगैरह ।

1) प्रः घौर महाहरामी कहाँ है ?

उः यह केवल तभी प्रत्यक्ष होगा जब राज आवरण अपने अंगो सहित लुप्त होगा ? .... बहुत जल्दी ।

2) प्रः आत्मिक जहाज कैसे डूबता है ?

उः ए) जुर्माना एक रुपया + आत्मा विशेष + स्थान अथवा नाम विशेष = जुर्माना एक लाख रुपया ।

बी) जुर्माना एक रुपया + मददगार अथवा सेवादार + स्थान अथवा नाम विशेष = जुर्माना एक करोड़ रुपया ।

सी) जुर्माना एक रुपया + चलाने वाला अथवा संस्थापक + स्थान अथवा नाम विशेष = जुर्माना एक अरब रुपया ।

(टिप्पणी: "यह जुर्माना केवल इशारा मात्र ही है असल बहुत विशाल तथा घोर भयानक निश्चित अटल है "मुबारक हो" आपका अपना निश्चित व्यवहार विशेष अटल")

(एक रुपया = 50 पैसे संस्थापक को + 25 पैसे मददगार + 25 पैसे कमाने वाले को)

(पूजा अथवा ध्यान = केवल आत्मिक व्यवहार विशेष ।)

(व्यवहार = मन + वचन + अंग) अंग = शरीर द्वारा किया गया काम।

(पहला अथवा आखिरी फैंसला = केवल आत्मा का अपना निजी +/- व्यवहार)

Interest @ +/- 4 to 10% per day minimum fixed.

99.999% = वायुमय शरीर (प्रेत जून) में फंसी आंशिक भोगी ईर्ष्यालु समर्थ आत्माऐं ।

.0001% = ऐसी दोगली रंडी आत्मा जो किसी भी ऊपरी मंडल से संबंध रखती है । (आज के गुरू रूप महान परमात्मा के बाप अथवा पातशाह इत्यादि)

परम चेतन सत्ता (only alone real founder = प्रत्यक्ष + धारण + विलय + प्राकृतिक कण घोर निश्चित सॉफ्टवेयर

(software) जैसे हैं) आत्मिक तथा प्राकृतिक कण को इस घौर महासुन्धर अन्धकार रूपी सॉफ्टवेयर ने प्रत्यक्ष तथा धारण कर रखा है स्वतंत्र रूप से, यही आप का पुर्व निश्चित विधाता विशेष है, संचालक (founder) का इसमें कोई काल्पनिक दखल नहीं है तथा इस सॉफ्टवेयर में संचालक (founder) को जानने की समर्था काल्पनिक रूप से भी घौर महा असंभव है तकनीकी रूप से क्योंकि इसकी क्षमता संचालक (founder) चरित्र में फीके से कण मात्र सी ही है केवल, जैसे कि आप के चरित्र में आपके पैर के नीचे के एक धूल के कण मात्र जैसी । आत्मिक तथा प्राकृतिक कण रूपी सॉफ्टवेयर (software) दोनों एक दूसरे के पूरक विशेष हैं । आत्मिक कण पूर्ण बुद्धि सम्पन्न स्वतंत्र विशेष है तथा प्राकृतिक कण व्यवहार विहिन सीधा अंधकार रूपी सॉफ्टवेयर के निश्चित नियंत्रण विशेष में है । आत्मिक कण पूर्ण स्वतंत्र होने के बावजूद केवल व्यवहार विशेष से बंध जाता है जो अप्रत्यक्ष (indirect) रूप से प्रकृति के जरिये अंधकार के निश्चित पूर्व नियंत्रण में रहता है यकीनी तौर पर । जिस प्रकाश को परमात्मा साबित किया जा रहा है वह केवल इस अंधकार रूपी सॉफ्टवेयर (software) का केवल एक तुच्छ सा तकनिकी पहलू मात्र ही है निश्चित रूप से । पूरी सत्ता घौर अनंत सत्ताओं का समूह इस अंधकार रूपी स्वतंत्र सॉफ्टवेयर में केवल मात्र एक फीके से कण जैसा ही है ।

प्राकृतिक कण रूपी सॉफ्टवेयर चिपक कर विभिन्न आकारों को प्रत्यक्ष करता हुआ निर्धारित अंधकार में बंधा समस्त आत्मिक कणों को व्यवहारिक रूप से बाँधता तथा घुमाता चला जाता है। प्रत्येक कीड़ा प्राकृतिक रूप से बंधा आत्मिक रूप से कभी न कभी अवश्य इन्द्र विशेष रह चुका है व्यवहारिक रूप से निश्चित तौर पर।

उदाहरण: (1) इन्द्र अहिल्या कांड। (2) बाणों की शय्या पर भीष्म से द्रोपदी का प्रश्न। (3) अज का भिक्षा दान। (4) दशरथ का पुत्र वियोग। (5) राम का बाली कांड। (6) सौरभ ऋषि का आंशिक दृष्टि मच्छ का संग। (7) नृग का गऊ दान। (8) युद्ध में द्रोणाचार्य द्वारा युधिष्ठिर से सत्य रूपी प्रश्न विशेष।

हे चतुर विद्वान प्राणी जरा सोच क्या इन महान तपस्वियों का कोई गुरू नहीं था अथवा इन्होंने परमात्मा की जप, ध्यान अथवा पूजा नहीं की थी नतीजा निश्चित रूप से तेरे सामने प्रत्यक्ष उपलब्ध है। दर्शन-दृष्टि-नाम-पूजा इत्यादि कर्मकांडों से (clearance certificate) नहीं मिला करते और बिना इस प्रमाण-पत्र के अभाव में क्या तू अगले मुल्क का वीसा (visa) प्राप्त करने में समर्थ है ? यकीनी तौर पर सब कुछ तेरे स्वयं के हाथ की कलम से लिखा हुआ निश्चित विधान रूपी नतीजा है

प्रत्येक काल अथवा स्थिति में जरूरत मुन्डवाने वालों की है मूणडने वाले प्रत्येक काल स्थिति में अनावश्यक खत-पतवार की तरह प्रत्यक्ष उपलब्ध हो ही जाते हैं । तप के अभाव में राज की कल्पना व्यर्थ ही है तथा राज से नरक निश्चित रूप से बंधा हुआ है हे महा मूर्ख चतुर प्राणी विशेष । आत्मिक कण कमाई (earn) तथा खर्च से बंधा हुआ स्वतंत्र विचरण विशेष करता है इस अंधकार रूपी आवश्यक सॉफ्टवेयर विशेष में भुगतान आत्मिक अभाव की अवस्था में सीधा प्रकृति के जरिये बंधा हुआ सीधा अन्धकार में +/- बढ़ता चला जाता है । "मुक्ति" नाम की कोई कल्पना इस सत्ता विशेष में नहीं है ! केवल राजा से रंक तक की विभिन्न अवस्थाएँ विशेष-विशेष से निर्धारित हैं निश्चित रूप से । आत्मिक तथा प्राकृतिक कण रूपी सॉफ्टवेयर दोनों एक दूसरे के "पूरक" विशेष हैं । आत्मिक कण पूर्ण स्वतंत्र-बुद्धि सम्पन्न-व्यवहारिक न चिपकने वाला "मांग रूपी" अनोखा तथा विचित्र चमकीला सा सॉफ्टवेयर है जो स्वतंत्र रूप से एक "चेतन सैल" की तरह से निरन्तर गतिशील विशेष है । "पूर्ण ज्ञान" इस सॉफ्टवेयर में प्रतिफल निरन्तर साक्षात रूप से प्रत्यक्ष उपलब्ध रहता है । बदलने अथवा मिटने की कोई कल्पना तक घोर असम्भव है निश्चित रूप से (तकनीकी कारण विशेष) इसी तरह से "प्राकृतिक कण" भी चेतन तथा चमकीला दुर्लभ आवश्यक सॉफ्टवेयर विशेष है । यह कण आत्मिक कण की मांग विशेष-

2 महान विशेष-2 का केवल निश्चित पूरक विशेष है तकनीकी रूप से । इसके अभाव में आत्मिक कण की मांग केवल व्यर्थ मात्र है विशेष रूप से । प्राकृतिक कण बुद्धिहीन-अनुभवहीन चेतन लेकिन निष्क्रिय चिपकने वाला (निर्धारित समय विशेष के लिये) विभिन्न-2 रंगो-स्वादों-रूपों तथा समृथाओं विशेषों को प्रत्यक्ष उपलब्ध तथा अनुभव विशेष-2 करवाने वाला "परतन्त्र" निर्धारित चमकीला-अनोखा लेकिन एक विशेष विचित्र सा आवश्यक पूरक सॉफ्टवेयर विशेष है जो सीधा बोर्ड रूपी "गहन अंधकार" नाम के सॉफ्टवेयर से नियंत्रित है तकनीकी रूप से जिसे आप "आवाज रूपी प्रकाश विशेष" कहते हैं अधूरी भाषा में ! यह गहन अंधकार रूपी मुख्य सॉफ्टवेयर इस सत्ता विशेष में जो अनंत छोटी-2 अनंत महान-2 सत्ता विशेषों का समूह विशेष है में एक स्वतंत्र पहले से निर्धारित आवरणों नतीजों को तकनीकी रूप से धारण किये हुऐ एक बैटरी के "स्वतंत्र सैल" की तरह से कार्य विशेष करता है जिस का सैल बनाने वाले से कोई सम्बन्ध विशेष नहीं रहता लेकिन कार्य विशेष वह पूर्व निर्धारित दायरों में ही करता है निरन्तर तकनीकी कारणों से बंधा हुआ व्यवहार विशेष में आते ही बिना किसी भी प्लस अथवा माइनस की भावना विशेष के तकनीकी रूप से ! सभी भावना तथा अनुभव केवल आत्मिक कण विशेष में ही है । प्राकृतिक कण में इसका पूर्व अभाव है तकनीकी रूप से । समस्त मण्डलों-सत्ताओं में इस प्राकृतिक

कण रूपी अनोखे विचित्र सॉफ्टवेयर से गहन अंधकार रूपी सॉफ्टवेयर एक विशेष तरह के आवरणों विशेषों को प्रत्यक्ष करता है विभिन्न-2 प्राकृतिक कणों को जोड़ कर । सभी प्राकृतिक कण एक से दिखते हैं परन्तु दूसरे से जुड़ते ही विभिन्न-2 अनोखे रंग-रूप-स्वाद-समर्था इत्यादि-2 प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होने लगते हैं निर्धारित समय विशेष के लिये जो गहन अन्धकार विशेष द्वारा नियंत्रित लेकिन केवल आत्मिक व्यवहार द्वारा निर्धारित विशेष होते हैं तकनीकी रूप से निरन्तर "मांग तथा पूर्ति" विशेष-2 को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष-2 करवाने हेतू तकनीकी कारणों से । आत्मिक कण की प्रत्येक मांग तथा संतुष्टि अथवा तृप्ति में एक प्राकृतिक आवरण विशेष है तकनीकी रूप से प्रत्येक मण्डल की प्रत्येक अवस्था विशेष में आवश्यक रूप से ! चाहे वो प्रकाश रूपी आवाजों का ही अनुभव विशेष क्यों न हो बिना प्राकृतिक कण के कुछ भी आत्मिक अनुभव किसी भी खण्ड अथवा मण्डल में केवल व्यर्थ का प्रलाप मात्र है तकनीकी कारण से यह भी तकनीकी कारण है कि विशेष दायरों में आत्मिक कण प्राकृतिक कण को प्रत्यक्ष अनुभव नहीं कर पाता और स्वंय को मुक्ति की "संज्ञा" विशेष देने की भूल विशेष कर बैठता है और कुछ इसी भूल विशेष की शिकार अथवा रोगी आत्मायें विशेष-2 महान-2 इस मृग-मरीचिका रूपी पदवी विशेष को उपलब्ध करवाने विशेष का "अधूरा कुकर्म" करने लग जाती हैं ! प्रत्येक आंशिक व्यवहार

मात्र से प्लस तथा माइन्स का प्राकृतिक अदृश्य दायरा तकनीकी रूप से आत्मिक कण के चारों ओर निरन्तर बनता तथा केवल प्रत्यक्ष पूर्ण अनुभव विशेष करने पर ही निरन्तर मिटता विशेष रहता है आधारभूत तकनीकी कारणों विशेषों से निरन्तर बंधा हुआ । कोई आत्मिक कण अपनी उपलब्ध प्राकृतिक समृथा अनुसार दूसरे आत्मिक कण के उपलब्ध दायरों में समयानुसार रोक तो लगा सकता है अपनी क्षमता विशेष को निरन्तर घटाता अथवा खर्च विशेष करता हुआ परन्तु आंशिक रूप से भी प्रत्येक आत्मिक कण के स्वयं को उपलब्ध दायरों विशेषों को मिटाना तो दूर केवल आंशिक रूप से घटने की भी कल्पना केवल व्यर्थ का प्रलाप मात्र है तकनीकी कारणों से यकीनी तौर पर । दायरा मिटे अथवा घटेगा तो केवल स्वयं के प्रत्यक्ष के पूरे-2 विद इंटरेस्ट अनुभव मात्र विशेष से अनन्त काल के बाद अनन्त सिफारिशों तथा उपायों-महानों-योगदानों के बाद भी पूर्ण तथा बढ़े हुए ब्याज सहित पूरा-2 प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने के बाद ही आत्मिक कण राजा से रंक तक की अवस्था विशेष-2 प्राप्त तथा अनुभव विशेष-2 करने में समर्थ विशेष-2 होता है अलग-2 मण्डलों तथा खण्डों विशेषों में निरन्तर घूमता हुआ प्लस तथा माइन्स विशेष-2 देता हुआ संतुष्ट विशेष-2 होने को निरन्तर प्रयत्नशील रहता है । समस्त काल्पनिक व्यवहार सहित आत्मिक कामना एक निश्चित विचार रूपी प्रत्येक आत्मिक कण की "निजी धरोहर" है निश्चित

रूप से एक "फिक्स डिपोज़िट" के रूप में जो जब भी कैश होगी पहले या देर से-समयानुसार पूरा-2 इंटरेस्ट प्रत्यक्ष विशेष अनुभव करने के लिये निश्चित रूप से पूर्ण बाध्य विशेष है तकनीकी कारणों से निरन्तर । अब तेरी "दखल अंदाजी" स्वंय की अथवा दूसरे महान-2 भगवानों विशेषों की तुझे ब्याज सहित मुबारक है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । मनुष्य लोक में सबसे जोखिम अथवा भयानक कार्य अगर कोई है तो वह है "मनुष्यता" में दखल देना नतीजा पहले से ही प्रत्येक आंशिक से आंशिक विचार का भी घौर निश्चित विशेष है प्रत्येक काल्पनिक स्थिति सहित तकनीकी रूप से प्राकृतिक कण रूपी समर्था विशेष के जरिये "गहन अंधकार रूपी सॉफ्टवेयर" में निश्चित तौर पर निरन्तर प्रत्येक काल विशेष में ।

एक आत्मिक कण रूपी "नट" ने मीडिया में स्वंय को प्रत्यक्ष किया निजी कारणों से और प्लस ले कर आगे बढ़ गया । "मीडिया" (वेश्यावृति) = यश + निंदा । अब अनुबंधित इसका प्रयोग भोक्ता पर माइनस रूप में निरन्तर करता है स्वंय के निजी कारणों से जब तक यह माइन्स की जड़ पीढ़ी दर पीढ़ी अनंत काल तक विभिन्न कार्य रूपी प्रयोगों में सम्बन्धों-मददगारों सहित प्रतियोगिता होती रहेगी इसका माइन्स भी तकनीकी रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी अनंत काल तक अधिकारिक हिस्से अनुसार "नट" को भी सभी संबधित अधिकारिक दायरों सहित को प्रत्यक्ष अनुभव

विशेष करने के लिये मजबूर विशेष होना ही पड़ेगा ! न चाहने से भी क्या हो सकेगा कुछ ? इसी तरह से प्रत्येक समूह विशेष राज सत्ता सहित जो मनुष्यता का नशा दुर्लभ विशेष-2 भोगते हैं अधिकारिक मनुष्यता का माइनस भी ब्याज सहित अन्नत काल तक सभी सम्बन्धित दायरों सहितों को पूरा-2 नशा विशेष-2 करने के लिये मजबूर विशेष-2 होना ही पड़ता है अनन्त काल के बाद भी इसी तरह से राजा से रंक के सभी आवरण विभिन्न-2 समर्था विशेष-2 प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करते हुऐ "आत्मिक कण" अनुभव रूपी मांग से बंधा हुआ स्वतंत्र पूरे अन्धकार रूपी सॉफ्टवेयर विशेष में निरन्तर विचरण विशेष करता है । Hey smart guy ....? What an Idea this is.......!

ऐसे अनंत स्वतंत्र सॉफ्टवेयर फाउंडर के केवल विचार मात्र से ही प्रत्यक्ष व्यवहारित हो जाते हैं । अरे सच के ठेकेदार रूपी भगवानों-पातशाहों-गुरूओं वगैरह-वगैरह ....? यह केवल एक विचार रूपी "दृष्टिकोण" सॉफ्टवेयर में स्थापित हो चुका है निरन्तर तुम्हें विकराल विशेष-2 अनुभव विशेष-2 करवाने हेतू रोक सको तो रोक लो ....!